



राजकीय महिला सत्सतकोत्तर महाविद्यालय गाजीपुर

दिनांक 18.07.2023 को राजकीय महिला सत्सतकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर में भूगोल विभाग के तत्वावधान में एक वैचारिक संगोष्ठी का आयोजन विकासशील देशों पर भूमंडलीकरण का प्रभाव: भारत के विशेष संदर्भ में आयोजित हुआ। संगोष्ठी की शुरुआत करते हुए डॉ संतन कुमार राम ने बताया कि वर्तमान विश्व परिदृश्य विरोधाभासों से भरा हुआ है गरीब और अमीर के बीच की खाई भयावह रूप से चौड़ी हुई है, जो देश हथियारों के सबसे बड़े व्यापारी हैं वही शांति और लोकतंत्र का सबसे ज्यादा ढिंढोरा पीट रहे हैं। विश्व बैंक ने संसार के देशों को उनकी आय एवं मानव विकास सूचकांक के आधार पर चार वर्गों में विभाजित किया है, दुनिया में असमानता घटाने के लिए हमें इस विकास की अवधारणा को समझने तथा संधृत विकास की जीवन पद्धति को अपनाने की जरूरत है।

संगोष्ठी के मुख्य वक्ता डॉ पीयूष कुमार सिंह ने बताया कि वैश्वीकरण एक प्रक्रिया है जिसके चिन्ह हमें प्राचीन सभ्यताओं से ही मिलते हैं, आधुनिक विश्व में उपनिवेशवाद के साथ इसका प्रवेश होता है और इस प्रक्रिया के अंतर्गत दुनिया के अलग-अलग हिस्सों के बीच आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जुड़ाव होते हैं। भूमंडलीकरण की राजनीति को बाजार एवं पूंजी के वर्चस्व का दौर कहा जाता है क्योंकि इस समय बाजारवादी शक्तियों का ही राजनीति, लोकनीति, अर्थनीति, विदेशनीति पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ा है। भारत में पीवी नरसिम्हा राव के नेतृत्व में उदारीकरण निजीकरण एवं भूमंडलीकरण के जिस युग का सूत्रपात 1991 में हुआ आज का भारत भी उसी मार्ग पर चलकर विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में प्रतिष्ठित है। वैश्वीकरण का यह दौर अब ग्लोबल से ग्लोकल हो चुका है, जहां पर देश दुनिया के साथ स्थानीय जरूरतों विशेषज्ञताओं को उभार आ जा रहा है। आज हर गली में चाइनीस स्टॉल और विश्व के सभी प्रमुख ब्रांडों की दुकानें इस बात की पुष्टि करती हैं की भारत का पिछड़ा से पिछड़ा क्षेत्र की भूमंडलीकरण के इस दौर में अछूता नहीं है।

इस अवसर पर बड़ी संख्या में विद्यार्थी तथा महाविद्यालय के अनेक प्राध्यापक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन सुश्री दिव्या पांडे के द्वारा किया गया।





